

# शिक्षास्मृति:

अन्तर्राष्ट्रीया समक्षालयकि- समीक्षिता यहूभाषा-गान्धार्व-गोप्यात्रिका

## SHIKSHA-SMRITI

(An International Peer-Reviewed Multi-Lingual Half-Yearly Research Journal)

प्रधानसम्पादकः

प्रो. के. रविशंकर मेनोन्

पूर्वसंकायाध्यक्षः, राष्ट्रीयसंस्कृतविद्यापीठम्, तिरुपतिः, (आ. प्र.)

सम्पादकः

डॉ. सोमनाथदाशः

राजायकाचार्यः, अनुसन्धानप्रकाशनविभागः, राष्ट्रीयसंस्कृतविश्वविद्यालय, तिरुपतिः

सहसम्पादकाः

डॉ. मुनीलकुमारशर्मा

डॉ. नितिनकुमारजैनः

डॉ. परमेशकुमारशर्मा

डॉ. आरती शर्मा

डॉ. दिनेशकुमारयादवः

डॉ. कालिकाप्रसाद शुक्ल

डॉ. कृष्णकान्त तिवारी

डॉ. दातारामपाठकः

श्रीमती प्रज्ञा

खुशबू कुमारी

प्रबन्धसम्पादकः

प्रो. राधागोविन्द त्रिपाठी

शिक्षाशास्त्रविभाग, राष्ट्रीयसंस्कृतविश्वविद्यालय, तिरुपतिः, (आ. प.)

प्रकाशकः

ओम शिक्षासमिति

मातृ-प्राशीष, 35, राधाविहार, इयोपुर, घोड़, पतापनगरम्

सामाजिक, इयोपुरम् (उत्तराखण्ड)-202033

संस्कृत

३५/६

## अनुक्रमणिका

पत्रम्	लेखकः	पृ.
न्यायनये शब्दार्थसम्बन्धविचारः	डॉ. पीताम्बरमिश्रः	1-3
आधुनिकसंस्कृतवृण्डीयविद्वांसः	डॉ. नृसिंहनाथगुरुः	4-7
श्रीमद्भागवदर्शनं श्रीमद्भागवतमहापुराणञ्च	डॉ. दयानन्दपाणिग्राही	8-11
अनिष्टपुराणानुसारं पुष्टरतीर्थम्	डॉ. पारमितापण्डा	12-15
गाङ्गाकालीनाभिसेखानां समयस्वरूपविमर्शः	डॉ. विष्णुप्रसाददाशः	16-20
धर्मशास्त्रमते कालविवेचनम्	डॉ. सितांशुभूषणपण्डा	21-31
एससूत्रव्याख्याने अभिनवगुप्तस्य अभिव्यक्तिवादः	डॉ. प्रसन्नकुमारपण्डा	32-34
उनरनैषधर्मते रीतिविचारः	डॉ. आरतीशर्मा	35-40
अधिगमसम्पादने स्मृतितत्त्वम्	डॉ. लक्ष्मीधरपण्डा	41-43
मालतीमाधवस्य मनोवैज्ञानिकविश्लेषणम्	डॉ. वसन्तकुमारमिश्रः	44-47
मन्दस्मितरामायणस्य महाकाव्यतत्त्वम्	सि. श्रीकान्तः	48-50
भवभूति के पात्रों की अतः प्रकृति का	डॉ. शिंग्रा पारीक	51-53
मनोवैज्ञानिक विश्लेषण	डॉ. मार्कण्डेय नाथ तिवारी	54-59
साख्यदर्शन में प्रकृति-पुरुष सम्बन्ध	सुमेधा	60-63
स्फोटविचारः		
प्रात्वर्थः	खुशबू कुमारी	64-65
सर्जनात्मकता	डॉ. सोमनाथदाशः	66-72
प्रफुल्लकुमारमिश्ररचिता चित्रकुरड्गी-		
एक विहङ्गावलोकनम्	बलरामसेठी	73-85
सीताहरणनाटके छन्दांसि	डॉ. सुनीलकुमारशर्मा	86-93
सस्कृतसाहित्ये विश्वकुटुम्बकत्वभावना	डॉ. सुशान्तकुमारराजः	94-97
सस्कृत पत्रकारिता एवं विहार	डॉ. आभा तिवारी	98-103
किशोरगणां समायोजन-नैतिकमूल्यशैक्षिकोप-		
लव्यीनाञ्च विकासे पञ्चतन्त्रकथानां प्रभावस्याध्ययनम्	डॉ. रेखाशर्मा	104-110
प्राचीनग्रन्थानां वर्णाश्रमविषये मूलतत्त्वम्	डॉ. कैलाशचन्द्रभीणा	111-115

## प्राचीनग्रन्थाना वर्णितमविषये पूर्वतस्मृति

हा. केलाशबन्धीणा (१)  
हा. तारादीपकुमार गांडी (२)

**दर्शन-**

हेरेकर्वादे दार्शनिक्यं रस्यादा भूतं तदं कर्तिभिः संकलितम् ।  
स्वप्नाद् इत्योपदर्शादरेत्यति भूते । परिदृष्टं पुरुषं मूले पनः स्मर्ते गतः ।  
यत्पुरुषं अदधुः कर्तिभा व्यक्त्यप्यत् ।  
पुरुषं किञ्चन्यं को बाहू का उरु पादा उच्चाते ॥  
ब्राह्मणोऽस्म युख्यासीद् बाहू राजन्यः वृतः ।  
उरु तदस्य यद्वैरयः पद्म्भां शूद्रो अजायत ॥'

**दिव्यदर्शन-**

यद्युक्त्यं द्वन्द्वदर्शनं व्याख्याने साध्याः प्राह-

उद्देश्यरेण ब्रह्मणादेत्युच्चिति वकु ब्रह्मादिना प्रक्षा उच्चाते । प्रजापते ब्राह्मणादेवा: गत् यदा पुरुषं विराङ्गं  
क्षम्भुः लक्ष्येनोत्तरित्यन्तः तदानीं कर्तिभिः प्रकारैः व्यक्त्यप्यत् विविधं कर्तिपतवनः । अत्र पुरुषस्य पुरुषं  
किन्तु उत्तरं को बाहू अभूतम् । का उरु । कौ च पादावुच्येते प्रथमं सापाद्यरूपः प्रक्षः पद्म्भात् मुखं किंप् इत्यादिना  
दिव्योदित्याद् इत्था ।

इदं द्वौद्योक्तावा इत्यानामुत्तराणि वर्णयति । अस्य प्रजापते ब्राह्मणः ब्राह्मणत्वजातिविशिष्टः पुरुषः मुख्यासीत्  
मुख्युक्त्यं इत्यर्थः । देवदर्शनं लक्ष्येन वर्त्तिभाद् पुरुषः सः बाहूकृतः बाहुत्वेन निष्ठादितः । बाहुभ्यामुत्पन्न इत्यन्धीः ।  
तत् लक्ष्यनाम् अस्य इत्यपते यद् वैरयः संपन्नः । उरुभ्यामुत्पन्न इत्यर्थः । तथास्य पद्म्भां पादाभ्यां शूद्रः शूद्रत्वजातिपाद्  
उरुषं अव्यवहार इत्य च मुखादिभ्यो ब्राह्मणादीनामुत्पत्तिर्यजुः संहितायां सम्प्रकाण्डे स मुखतस्मिवृतं निरपेक्षीतेत्यादौ  
इत्यादी विम्बहन्त्यात् ।

अत्यनुविदि द्वयुण्णी वर्णनां किंवाजातीना स्पष्टोल्लेखः प्राप्यते । सापतिके इतिहासं ग्रन्थे च  
वर्णाद्यव्यवस्थादेवक्षयं समर्पितः । अत्राह पद्म्भाय वर्णव्यवस्थायाः उल्लेखः प्राप्यते तथैव वर्णव्यापि । वर्णव्यवस्था रात्रृस्य  
इति इत्याद इति अद्य दुखाय वतते तदह न वश्यामि । यद्यपि वर्त्तानकाले वर्णव्यावस्थायाः यादुशः कुप्रसारः सापाजस्य  
विक्षुप्तुरुदाद शानुभाववर्त्तनाय सुखुरुदानिति विच्छेदनाय च भवति निश्चितपेवाय संक्रमणकालः प्रतीयते ।

भावद्वन्द्वेद भावात् वर्णव्यवस्था समर्थानामास स्पृहशब्दैश्च वर्णव्यापास । पुराणादिषु च एतस्य वीजस्य विकासो  
दृश्यते किन्तु इत्यानां त्रयां स्वार्थलोकुपा स्वाप्याय ज्ञानविज्ञानहीना खला गिर्वावारं प्रसारयन्ति । यत्र कुरुपि विभागः  
दृश्यते स विभागं भवेत्या विकासाय मुख्याय शान्तये सम्पूर्णैः स भवति । यथा रात्रेप्रदेश विभागः रात्र्यस्य सम्पूर्णैः वृतः न तु  
विभक्तः उद्देश रात्र्यात् वर्णितृत् सर्वत्रा स्वतन्त्री जायते । रात्रेषु रात्र्यम् अनुशासनं भवति । एवं प्रकारेण रात्र्यस्य रात्र्यस्य  
च सम्मनिविद्वनोऽस्ते । यथा वर्णविभागः वाहयेषु (अशीषु) दृश्यते तस्य विभागस्य व्यवहारे गिर्वानो च यहस्ते  
वर्णविभागीकृतप् । विशिष्ट वर्णां चतु षष्ठिर्वर्णां यात्रुव्यवस्थयापाणिनीभ्यां च सम्पूर्णात् । केवल स्वर वर्णां, केवल  
द्वात्रज्ञवर्णां, स्वर्णवर्णां, अन्तस्त्रवर्णां, अर्णोग्राहाद्यं भवति किन्तु अध्ययवपाच्यरात्रा एतेषां विभागानां ज्ञाने

✓



ISSN No : 2581-6306

website : <http://shisrrj.com>

Impact Factor : 5.239

## Shodhshauryam, International Scientific Refereed Research Journal Certificate of Publication

Ref : SHISRRJ/Certificate/Volume 4/Issue 1/427

20-Jan-2021

This is to certify that the research paper entitled

### श्रीमद्भगवद् गीता में ईश्विक विचार

डॉ. कैलाश चंद्र मोहन

सद्गुरु गुरुरेह, दिल्ली जनरल फिल्म्स, श्री लक्ष्म बद्राद्वा शास्त्री गण्डीय संस्कृत विश्वविद्यालय, केंद्रीय विश्वविद्यालय नई इलाहा, झज्जर।

This review is found suitable and has been published in the Shodhshauryam, International Scientific Refereed Research Journal(SHISRRJ), Volume 4, Issue 1, January-February 2021. [ Page No : 139-149 ]

This Paper can be downloaded from the following SHISRRJ website link

<http://shisrrj.com/SHISRRJ21438>

SHISRRJ Team wishes all the best for bright future

Associate Editor  
SHISRRJ

Editor in Chief  
SHISRRJ

Peer Reviewed and Refereed International Journal



## श्रीमद्भगवद् गीता में शैक्षिक विचार

डॉ. कैलाश अनंद मीणा  
 सहायक प्रोफेसर, शिक्षा शास्त्र विभाग,  
 श्री लाल बहादुर शास्त्री यार्डीय संस्कृत विश्वविद्यालय,  
 कन्द्रीय विश्वविद्यालय नई दिल्ली, भारत।

### Article Info

Volume 4, Issue 1

Page Number : 139-149

### Publication Issue :

January-February-2021

### Article History

Accepted : 16 Jan 2021

Published : 30 Jan 2021

**सारांश —** श्रीमद्भगवद् गीता में श्री कृष्ण ने अर्जुन को जीवन जीने की सीख दी उन्होंने बताया कि व्यक्ति को मोह ममता का त्याग कर सही और सल्ल वान का निर्णय स्वयं करना चाहिए। भगवान् श्री कृष्ण ने कहा कि जीना और मरना जन्म लेना और बढ़ना विषयों का आना जाना सुख दुःख का अनुभव ये ता संसार में होते ही हैं इनसे विचलित नहीं होना चाहिए एवं अपने कर्मप्रश्न पर अविरल चलते रहना चाहिए। गीता में सामाजिक, आरित्रिक, सावेगिक, शारीरिक, आध्यात्मिक, शिक्षा के साथ—साथ मनुष्य को साहसी, कर्मठी, स्वविवेकी, जिज्ञासु, श्रद्धावान्, निर्भयी, वफादार, जिम्मेदार, चिन्तामुक्त, पर्यावरण व प्रकृति प्रेमी, कल्याणकारी, एकाग्रचित्तयुक्त, वैरभाव रहित, रागद्वेष रहित, स्वकर्म में तत्परी, व्यावहारिक ज्ञान में कुशल, स्वरथ तथा ज्ञानी होने की भी शिक्षा दी गई।

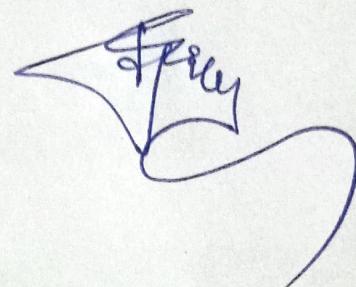
**मुख्यशब्द —** श्रीमद्भगवद् गीता, शैक्षिक, अर्जुन, जीवन सामाजिक, आरित्रिक, सावेगिक, शारीरिक, आध्यात्मिक, साहसी, कर्मठी, स्वविवेकी, जिज्ञासु, श्रद्धावान्, निर्भयी, वफादार, जिम्मेदार, चिन्तामुक्त।

गीता चेटों और उपनिषदों का सार माना जाता है। गीता सत्य और आध्यात्म का मार्ग दिखाकर मोक्ष की प्राप्ति करवाती है। गीता अपने अंदर भगवान् श्री कृष्ण के उपदेश को समेटे हुए है। गीता में तीन योगों के बारे में बताया गया है — कर्म योग, भक्ति योग, और ज्ञान योग। गीता हमें जीवन में शत्रुओं से लड़ना चिखाती है ईश्वर से एक गहरा नाता जोड़ने में भी मदद करती है। गीता त्याग प्रेम और कर्तव्य का संदेश देती है। गीता में कर्म वो बहुत अधिक महत्व दिया गया है। गीता एक पुस्तक ही नहीं अपितु यह तो जीवन मूल्य के दुर्लभ सत्य को अपने में समेटे हुए है। कृष्ण ने सच्चे मित्र और गुरु की तरह अर्जुन का न सिर्फ मार्गदर्शन किया बल्कि गीता का महान उपदेश भी दिया उन्होंने बताया कि इस संसार में हर मनुष्य के जन्म का कोई ना कोई उदूरशय होता है, मूल्य पर शोक करना अर्थ है, यह तो अटल सत्य है जो जन्म लेगा उसकी मूल्य विशिष्ट है जिस प्रकार हम पुराने वर्षों को त्याग कर नवीन वर्षों को धारण करते हैं उसी प्रवार आत्मा पुराने शरीर के नष्ट होने पर नए शरीर को धारण करती है।

वाराणसी जीणानि यथा विहाय, नवानि गृहणाति नरोऽप्रसाणि ।

यथा शरीराणि विहाय जीणान्यन्यानि संयति नवानि देही ॥ —१

- ३० श्रीमदभगवद गीता ११.५५  
३१ श्रीमदभगवद गीता ३.१३  
३२ श्रीमदभगवद गीता ३.११  
३३ मत्यपुराण  
३४ श्रीमदभगवद गीता ५.२५  
३५ श्रीमदभगवद गीता ६.३५  
३६ श्रीमदभगवद गीता ४.३८  
३७ श्रीमदभगवद गीता ४.३९  
३८ विष्णुपुराण  
३९ म भा भीष्मपर्व अ०४३/१



ISSN: 2394-6303

Impact  
Factor  
7.821 (2020)

Printing Area<sup>®</sup>  
Peer-Reviewed International Journal

July 2021

Issue-78, Vol-03

01

महाराष्ट्रीय विज्ञानिक शीर्ष पत्रिका



Printing Area International Interdisciplinary Research  
Journal in Marathi, Hindi & English Languages

July 2021, Issue-78, Vol-03

Editor

Dr. Bapu g. Gholap

(M.A.Mar. & Pol.Sci., B.Ed.Ph.D.NET.)

Laydiel

Digitized by srujanika@gmail.com



Printed by: Harshwardhan Publication Pvt.Ltd. Published by Ghodke Archana  
Rajendra & Printed & published at: Harshwardhan Publication Pvt.Ltd, At Post:  
Limbaganesh Dist. Beed -431122 (Maharashtra) and Editor Dr. Gholap Bapu Sampat.

Reg. No.U74420MH2012PTC257055

 **Harshwardhan Publication Pvt.Ltd.**  
At Post: Limbaganesh, P.O: Dist. Beed  
Pin-431123 (Maharashtra) Cell: 07588057695, 09850700095

harshwardhanpublinc@gmail.com, vidyawarta@gmail.com

All Types Educational & Reference Book Publishing & Distributor

[www.harpublinc.com](http://www.harpublinc.com)

27) श्रीमा इग्ने वडे महाराष्ट्र का सरकारीत्तम  
Bindhya Prakash, Ernakulam

28) जनरेली यूःसि - विकास एवं गरीबी  
युनिट हासिला, पाठुळ

29) दोग बचा बचो वैष्ण और अन्य  
डॉ. कौलाश चतुर धीण & डा. हायेशाल मीना, दिल्ली

30) श्रेष्ठानी वडे जनजागृति न रखतवता आन्दोलन में महिलाओं वडी भूमिका  
मौल्य कुमारी, जयपुर

31) धर्म वडो सामाजिकशास्त्रीय अवधारणा  
पश्चीम वजेशिंह फो., जि. मेहराणा

32) उपर्युक्त अक्ष के बोटकों में उच्च शिक्षा की समस्या  
षट्टल प्रणवकुमार जे., शूरत

33) नाटकों वडो राष्ट्रीयता : आधुनिक संदर्भ  
डॉ. रुजाक काशार, जि. वादेड (महाराष्ट्र)

34) इतात्प्रयोगीतर हिंदी के सामाजिक उपचारों में स्त्री शिक्षा का प्रचार  
डॉ. शोवगारा रश्मिकेन वडो, राजकोट

35) बन्दियांव वडो अवधारणा, उद्देश्य एवं स्वरूप  
डॉ. आशुतोष कुमार राय & संजीव कुमार सिंह, हजारीबाग

36) मारवा धाट एवं राग एक पारंपारिक अध्ययन  
हर्षदीप घट्टकांत हिराणी & डॉ. अभिनीतकुमार सिंघ, डॉ. भारती राठोड, राजकोट

37) हातिहास को आइने में हातिहास का दिव्यज्ञाय  
उषा कुमारी & प्रदीप कुमार, हजारीबाग

38) राजा रामगोहन राय और नाथी-सुधार  
चतुरशा सिंह & डॉ. आशुतोष कुमार राय, देवधर

39) सामिजीबाई पुले : नारीवादी चित्तन और साहित्य दृष्टि  
प्रा.डॉ.शोभा परावंते, जालना

|| 118

|| 121

|| 126

|| 129

|| 134

|| 140

|| 145

|| 147

|| 151

|| 154

|| 157

|| 160

|| 162

## योग क्या क्यों कैसे और अब

डा. कैलाश चन्द मीणा  
सहायक प्रोफेसर, शिक्षा शास्त्र विभाग,  
श्री लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रीय संस्कृत  
विवि नई दिल्ली

डा. हरप्रिसाद मीणा  
अध्यापक (संस्कृत टीजीटी),  
दिल्ली सरकार, दिल्ली

### सारांश—

योगाचार्य भगवान्न पंतजलि ने सम्पूर्ण योग के रहस्य को अपने योगदर्शन में सूत्र रूप में प्रस्तुत किया है—योगशिचात्तवशति निरोध । अर्थात् चित् को एक जगह स्थापित करना ही योग है । २१ जून को ही योग दिवस मनाने के पीछे तर्क यह है कि इस दिन मूर्य का ताप सर्वाधिक प्रभावी होता है और प्रकरण की सकारात्मक उर्जा सक्रिय रहती है । योग जीवन मन और मस्तिष्क में उर्जा, शक्ति और सुन्दरता को जोड़ता है । योग में अनिम समाधि को आटांग योग में श्रेष्ठ माना गया है । जहाँ तक पहुंचने में आटांग नियमों का पालन करना अनिवार्य होता है । योग को शारीरिक मानसिक सामाजिक समन्वयन व भविष्य की चुनौतियों से सामना करने के लिए अपनाया जा रहा है । जिसमें प्राणायाम, आसन व मुद्राओं के अपनाने व पालन करने की आवश्यकता है । जब जाकर ही हम शरीर के गुरु बनने के साथ साथ विश्व के गुरु बन सकेंगे । योग क्या है—

योग शब्द संस्कृत भाषा की 'युज्' धातु से बना है । जिसका अर्थ है—जुड़ना, एकजुट होना या मिलना । प्राचीन ग्रथों के अनुसार नियमित योग करने से व्यक्ति की चेतना ब्रह्माण्ड की चेतना से जुड़

जाती है । जो मन एवं शरीर, मानव एवं प्रकृति के बीच भी सम्बन्ध स्थापित करता है । गीता में योग शब्द के बैसे तो कई अर्थ बताए हैं लेकिन हर योग अन्तः ईश्वर से मिलने के मार्ग से ही जोड़ता है जैसे योग का मतलब है आत्मा का परमात्मा से मिलन, इन्द्रियों को वश में करना तथा मन को एकाग्र करना आदि । गीता के अनुसार योग—

श्री कृष्ण के निर्देशानुसार अर्जुन को कर्म करना ही वास्तविक योग है । ‘हे धनञ्जय ! तू आसक्ति को त्याग कर तथा सिद्धि और असिद्धि में समान बुद्धि वाला होकर योग में स्थित हुआ कर्तव्यों को कर, समत्व ही योग कहलाता है’ । —१  
समत्व योग रूप ही कर्मों को कुशलता है । —२  
योग दुःख के संयोग का वियोग है । —३

अतः गीता में योग शब्द के तीन अर्थ हैं—  
१. समता—जैसे समत्व योग उच्यते । —४  
२. सामर्थ्य— ऐश्वर्य या प्रभाव जैसे—  
परं ये योगमैश्वर्यम । —५  
३. समाधी— यत्रोपरमते चित्त निरूप्त योगसेवया । —६

अन्तः गीता में योग शब्द का अर्थ मुख्य रूप से समता ही है । तथापि योग शब्द के अन्तर्गत तीनों ही रूप एवं अर्थ स्वीकार्य हैं ।

योग की आवश्यकता क्यों—

योग के बिना शारीरिक और मानसिक दोनों प्रकार की समस्याओं से पूरा विश्व जूझ रहा है । जिसके बिना आंतरिक अंगों में शिथिलता, तनावों में वृद्धि एकाग्रता में कमी की बेतहशा वृद्धि हो रही है । अतः योग की निम्न तात्कालिक कारणों से आवश्यकता है—

सामाजिक विकृतियाँ, अंधविश्वास, अस्वस्थ समाज, नशा, बलात्कार, ईर्ष्या, लालच, दुर्व्यवहार, कलह, तनाव, वृद्धों की उमेघा, अस्थिरता, अस्पष्टता, भ्रम, रोप, जरा, मृत्यु, एकता का अभाव, दुर्वलता, आत्महत्या, इन सभी प्रकार की विडम्बनाओं के दलदल से समाज तथा मानव जाति को बाहर निकालकर उन्हें इस प्रकृति जीव जन्म तथा ब्रह्माण्ड की सार्वभौमिक शक्ति से जोड़ने के लिए योग ही एक मात्र विकल्प

कृष्णन्तो विश्वमार्यम्

website : [www.chintanresearchjournal.com](http://www.chintanresearchjournal.com)  
Impact Factor : 6.750

यतेमहि स्वराज्ये  
ISSN : 2229-7227

International Refereed

# चिन्तन

अन्तर्राष्ट्रीय मूल्यांकित रिसर्च जर्नल  
( कला, साहित्य, मानविकी, समाज-विज्ञान, विधि, प्रबंधन, वाणिज्य एवं विज्ञान विषयों पर कॅंट्रिन )

(Indexed & Listed at : Research Bib, Japan)

(Indexed & Listed at : Indian Journal Index (IJIND EX))

(An International Peer Reviewed and Refereed Research Journal)

वर्ष : 12 अंक : 47

विक्रमी सम्पत् : 2080

अप्रैल-जून 2023

संपादक

आचार्य (डॉ.) शीलक राम



आचार्य अकादमी, भारत

ISO 9001 : 2015

## शोध-आलेखानुक्रम

→ संपादकीय	
आवार्य शीलक राम	
→ Information & Communication Technology in Automation of Libraries	
Navjot Kaur	10-12
→ Stretching it too far: A Critique of Comparative exercises in Philosophy	
Dr. Dinesh Jamwal	13-15
→ अद्यतन भारतीय परिपेक्ष्य में समाज नागरिक संहिता की प्रांसंगिकता एवं बोल्डनीयता	
लकी कुमार श्रीवास्तव, डॉ. श्यामलाल	16-21
→ Women in Today's Society	
Neeraj Meena	22-25
→ Social System and its Influence on Human Psychology	
Dr.Sakshi Gupta	26-32
→ Standardization of Artistic Gymnastic Skill Test on Cast to Handstand with Legs Together for Sub	
Vinay Bhatia, Dr. Harmanpreet Kaur	33-38
→ समाज में नारी का स्थान	
कुलदाराम सैनी	39-43
→ भारतीय संस्कृति के परिपेक्ष्य में योग का वोगदान	
डॉ. कैलाश चन्द मीणा	44-49



**International Refereed**

**Impact Factor: 6.750**  
**Peer reviewed**

'चिन्तन' अंतर्राष्ट्रीय रिसर्च जर्नल (ISSN: 2229-7227)

वर्ष 12, अंक 47 (पृ.सं. 44-49)

विक्रमी सम्वत्: 2080 (अप्रैल-जून 2023)

## भारतीय संस्कृति के परिप्रेक्ष्य में योग का योगदान

डॉ. कैलाश चन्द मीणा

सहायक प्रोफेसर

शिक्षापीठ श्री ला.ब.शा. रा.सं.वि.वि

### शोध आलेख सार

भारतीय संस्कृति के परिप्रेक्ष्य में योग को भारत की सबसे बड़ी देन विश्वभर में मानी जा रही है जिस प्रकार शून्य के आधार पर आधुनिक विज्ञान स्थापित हुआ उसी तरह आधुनिक जीवन का आधार भी योग बनता जा रहा है। आज विश्व पटल पर बढ़ता हुआ योग भारतीय संस्कृतिकी सांस्कृतिक विजय है गीता के "समत्वंयोग उच्चते" वाले समत्व भाव से जीने की प्रेरणा हमें योग ही दे रहा है। तथा योग आध्यात्मिक साधना का संचेतना का केंद्र रहा है योग को सभी परंपराओं में अपनाया है तथा इसका महत्व भारतीय संस्कृति में सदा से रहा है।

### मुख्य शब्द : संस्कृति, परिप्रेक्ष्य, योग, दर्शन, अष्टांग, चित्त, जगत।

योग की परंपरा बहुत प्राचीन है और इसके आदि प्रवक्ता हिरण्यगर्भ ही माने गए हैं और कोई नहीं - "हिरण्य योगस्य वक्ता नान्यः पुरातनः" वृ. यो. या. 12.5 उ. ऋग्वेद में भी अद्वितीय हिरण्यगर्भ के बारे में बताया गया है कि जो सूर्यादि तेजस्वी पदार्थों का गर्भ उत्पत्ति स्थान उत्पादक है वह ही प्रथम था, वह समस्त जगत का सनातन प्रादुर्भूत स्वामी है - "हिरण्यगर्भः संवर्तताग्रे भूतस्य जातःपतिरेकासीत्" ऋग्वेद 10.121.1 योग सूत्र में भी कहा गया है कि यह हिरण्यगर्भ परमपिता परमात्मा ही है। यह गुरुओं का भी गुरु है " सृः पुर्वशास्मि गुरुः कलेनानवच्छेदात्", योग सूत्र 1.26 हिरण्यगर्भ से पुरातन कोई नहीं है नान्यः पुरातनः - वृ. यो. या. स्मृ. 12.5 उ. । महाभारत में भी योग के आदि प्रवक्ता हिरण्यगर्भ को ही स्वीकार गया है - "हिरण्य योगस्य वक्ता नान्यः पुरातनः" महाभारत 12.349.65। इसी को योगी जन महान तथा विरचंची और अज (अजन्मा) भी कहते हैं - "हिरण्यगर्भो भगवान एष बुद्धिरिति स्मृतः महानिति च योगाषु वीरचरिति चाय्यजः" योगेश्वर श्रीकृष्ण अर्जुन को कहते हैं- ह अर्जुन मैंने किसी नई निष्ठा का उपदेश नहीं किया, किंतु तुझे अपना विश्वसनीय मित्र समझकर यह लुप्तशाय सनातन योग का उत्तम रहस्य बताया है-

इंमें विवश्वरते योगं प्रीक्वानवन्मत्ययम्। विवस्वान्मवे प्राह मनुरिक्ष्वाक्वे एवं परंपरा प्राप्तमिमं  
राजर्थयो विदुः। स कालेनेह महता योगो नादः परन्तपः ॥ स एवायं मया ते द्य योगः प्रोक्तः  
पुरातनः । भक्तो सि मे सखा चेति रहस्यं ह्योत्तुतत्रम् ॥॥ गीता 4.1.3 )

योग का महत्व सर्वकालिक रहा है। योग साधना को कमोवेश दुनिया की सभी परंपराओं ने अपनाया है। अतः इसका महत्व सर्वकालिक व सार्वभौमिक रहा है। संतों और ऋषियों ने इस अत्यंत महत्वपूर्ण योग विद्या को एशिया मध्यपूर्व, उत्तरी अफ्रीका एवं दक्षिणी अमेरिका सहित विश्व के अलग-अलग भागों में प्रसारित किया। अगस्त्य मुनि ने इस योग संस्कृति का जीवन के रूप में विश्व के प्रत्येक भाग में प्रसारित किया। सिंधु एवं सरस्वती नदी घाटी सभ्यताओं 2700 ईसा पूर्व की अमर संस्कृति का प्रतिकल माने जाने का कारण है- योग का व्यापक स्वरूप तथा उसका परिणाम। सिंधु घाटी सभ्यता के अवशेष इस बात के प्रमाण है कि प्राचीन भारत

शोधशार्यम्



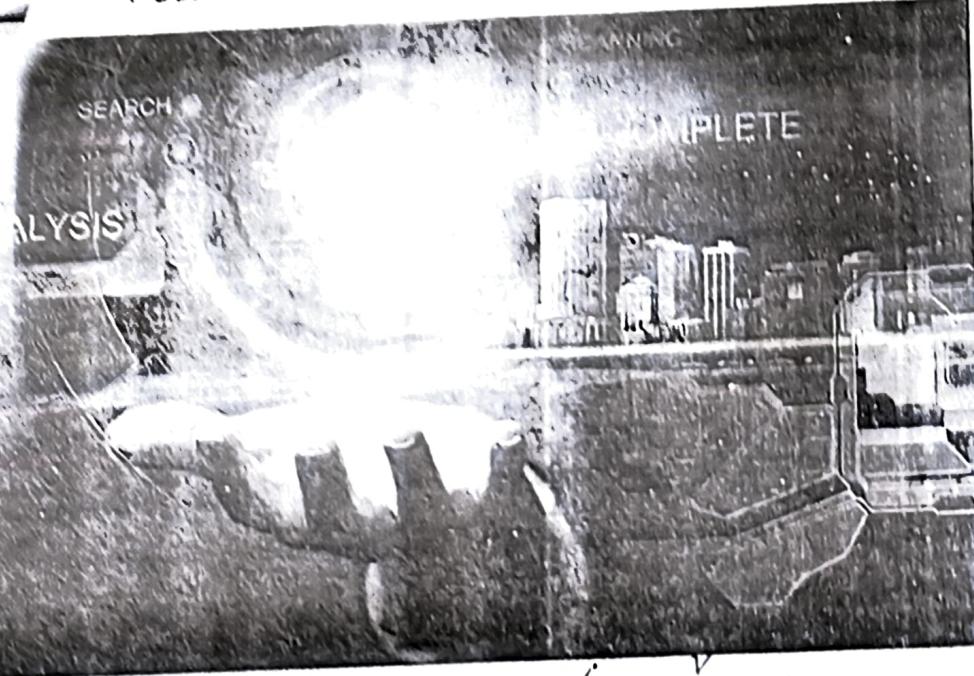
Website : <http://shisrrj.com>

ISSN : 2581-6806

Peer Reviewed and Refereed International Journal

Editor-In-Chief :

Dr. Raj Kumar



Impact Factor : 5.239 / 6.154

**SHODHSHAURYAM  
INTERNATIONAL SCIENTIFIC REFEREED  
RESEARCH JOURNAL**

Email: [editor@shisrrj.com](mailto:editor@shisrrj.com)

# Shodhshauryan

शोधशौर्यम् International Scientific Refereed  
Research Journal [ Frequency  
Bimonthly ]



- 8 बाल श्रम - एक सामाजिक 60-63  
अपराध

कविता कनौजिया  
असि. प्रो. समाजशास्त्र विभाग, उपाधि  
महाविद्यालय, पीलीभीत, भारत

>Show More ↗

- 9 ✓ अध्यापक शिक्षा : राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के परिप्रेक्ष्य में 64-68

डॉ कैलाश चन्द मीणा  
सहायक आचार्य, शिक्षापीठ, श्री लाल  
बहादुर शास्त्री राष्ट्रीय संस्कृत  
विश्वविद्यालय, नई दिल्ली।



## अध्यापक शिक्षा : राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के परिप्रेक्ष्य में

डॉ कैलाश चन्द मीणा

सहायक आचार्य, शिक्षापीठ, श्री लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय, नई दिल्ली।

### Article Info

#### Publication Issue :

May-June-2023

Volume 6, Issue 3

Page Number : 64-68

#### Article History

Received : 20 May 2023

Published : 30 June 2023

**सारांश :-** भारतीय संस्कृति में गुरु का स्थान बहुत पवित्र और ऊंचे दर्जे का माना गया है, गुरु माता पिता यहां तक कि ईश्वर से भी ज्यादा आदरणीय विश्वसनीय तथा सम्मानीय माना जाता है। गुरु श्रद्धा, आस्था और समर्पण का पर्याय है। 21वीं सदी के शिक्षार्थियों की नई पीढ़ी गूगल के गर्भ से निकली है। जो बहुत सी ऐसी सूचनाओं से सराबोर है जिनसे आज का टीचर भी शायद न हो। इस पीढ़ी को रूढ़ीवादी शिक्षक नहीं संभाल पायेंगे। ये नए जमाने के नौजवान हैं। इस जनरेशन को अपना एक संवाद सहयोगी चाहिए। जो उनकी बाते सुन सके। राष्ट्रीय शिक्षा नीति -2020 में इन्हीं सभी बिंदुओं पर चर्चा की गई है।

**बीज बिंदु :-** अध्यापक, राष्ट्रीय, शिक्षानीति, समग्र विकास, दृष्टिकोण, रचनात्मकता इत्यादि।

**प्रस्तावना :-** गुरु :-पारंपरिक अर्थ में :- जिसमें गांभीर्य हो।

**भाग्यवत् पुराण में :-** कृष्ण ने उद्धव को तटस्थ तपस्वी (अवधूत) के चौबीस गुरुओं के बारे में बताया था। जिसके अनुसार गुरु वह है जो तपस्वी में अंतर्दृष्टि पैदा करता है।

**स्कंद पुराण में :-** गुरु गीता में शिव ने पार्वती को बताया कि गुरु के बिना किसी व्यक्ति के लिए वेद समझना असंभव है।

**कृष्ण के अनुसार :-** जो मनुष्य की स्वतंत्रता को स्वीकार कर उसे स्वतंत्र बनने में सक्षम बनाता है।

**शिव के अनुसार :-** हमें गुरु पर निर्भर रहना आवश्यक है।

**गुरु गीता के अनुसार :-** गुरु पिता या माता यहां तक कि देवताओं के समान या उनसे भी ब्रेष्ट हैं।

**गीता के अनुसार :-** श्रद्धावान लभते ज्ञानम तत्परः संयतेद्रिय -- गुरु श्रद्धा, आस्था और समर्पण का पर्याय है।

**पुराणों के अनुसार :-** ब्रह्मण्डित के बिना देव युद्ध नहीं जीत सकते थे और शुक्र के बिना असुर पुनर्जीवित नहीं हो सकते।

**भारतीय संस्कृति में :-** जिस भान्या और अविनाशी तत्त्व का बोध हो जाए। गुरु प्रकाश स्तंभ है। गुरु पवित्रता का प्रत्यक्ष है। शीलकला का निर्वाह है।

**ISSN - 2581-6306**

**Peer Reviewed and Refereed  
International  
Scientific Research Journal**

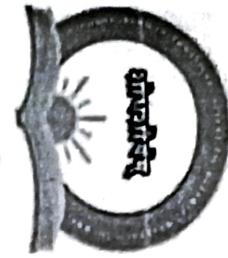


website : [www.shisrrj.com](http://www.shisrrj.com)

**SHODHSHAURYAM  
INTERNATIONAL SCIENTIFIC REFEREED  
RESEARCH JOURNAL**

7:45 ०८ अक्टूबर २०१४

०५५५५५५००००



शोधशौर्यम्

**Shodhshauryam**

E-ISSN : 2581-

6306

International Scientific Refereed  
Research Journal [ Frequency : Impact Factor : 7.239  
Bimonthly ]

41-48

7

भारतीय ज्ञान परंपरा में योग एवं नारी

डा. कैलाश चन्द्र गुरीणा  
सहायक प्रोफेसर, विश्वविद्यालय, नई दिल्ली।



## भारतीय ज्ञान परंपरा में योग एवं नारी

डा. कैलाश चन्द्र मीणा

सहायक प्रोफेसर, शिक्षापीठ, श्री ला.ब.शा. रा. संस्कृत विश्वविद्यालय, नई दिल्ली।

### Article Info

Received : 03 March 2024

Published : 15 March 2024

Publication Issue :

March-April-2024

Volume 7, Issue 2

Page Number : 41-48

**सारांश :-** प्रस्तुत पत्र में भारतीय ज्ञान परंपरा में योग एवं नारी की अवधारणा स्वरूप एवं विभिन्न दृष्टिकोणों के बारे में व्यापक वर्णन क्या जा रहा है भारतीय ज्ञान परंपरा में योग को भारत की सबसे बड़ी देन विश्वभर में मानी जा रही है। जिस प्रकार शून्य के आधार पर आधुनिक विज्ञान स्थापित हुआ उसी तरह आधुनिक जीवन का आधार भी योग बनता जा रहा है। आज विश्व पटल पर बढ़ता हुआ योग भारतीय ज्ञान परंपरा की विजय है। गीता के “समत्वं योग उच्चते” वाले समत्व भाव से जीने की प्रेरणा हमें योग ही दे रहा है। तथा योग आध्यात्मिक साधना का संचेतना का केंद्र रहा है। योग को सभी परंपराओं में अपनाया है तथा इसका महत्व भारतीय ज्ञान परंपरा में सदा से रहा है। नारी जीवन का प्रथम सोपान कन्या है, वैदिक काल में पुत्र के समान मंगलकारी कन्या को समझा जाता था नवरात्रा में नवदुर्गा का प्रतीक मानकर पूजा की जाती थी, नारी पद नर से ही उत्पन्न होता है नर और नारी जीवन रथ के दो पहिए हैं किसी एक को प्रथम स्थान पर बताकर दूसरे को गौण कहा ही नहीं जा सकता दोनों एक दूसरे के पूरक हैं, अर्धनारीश्वर ईश्वर के रूप में नर और नारी दोनों के समान अंश बताए गए हैं। विवाह के बाद हो कन्या नारी पद से जानी जाती है, नारी पद के पर्याय स्त्री, मेना, जाया, सुंदरी, दंपति, पत्नी आदि वैदिक काल में नारियों की सामाजिक तथा सर्वविधिक दशाओं की दृष्टि से स्वर्णिम काल रहा है। विभिन्न संवाद सूक्तों जैसे शर्मा - पाणी, यर्मा- यमी, विश्वामित्र - नदी आदि से स्पष्ट पता चलता है कि वैदिक काल में स्त्रियों भी परम विदुषी होती थीं। नारी अपनी इच्छा से वर का वरण करती थीं। माला-पिला के अनुमति से गांधर्व विवाह की अनुमति पाती थीं। पत्नी को गृह वी सामग्री कहा जाता था। यास्क ने देवर पद का निर्वचन “द्विलीयो वर उच्चते” व्याख्या में विश्वला जैसी कुशल योद्धा नारी इस बात का उदाहरण है कि स्त्रियों को पुरुष से भाग लेने का अधिकार भी प्राप्त था। पामिक काव्य स्त्रियों के विना कभी पूर्ण



## अध्यापक शिक्षा : राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के परिप्रेक्ष्य में

डॉ कैलाश चन्द मीणा

सहायक आचार्य, शिक्षापीठ, श्री लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय, नई दिल्ली।

### Article Info

**Publication Issue :**

May-June-2023

Volume 6, Issue 3

**Page Number :** 64-68

### Article History

**Received :** 20 May 2023

**Published :** 30 June 2023

**सारांश :-** भारतीय संस्कृति में गुरु का स्थान बहुत पवित्र और ऊंचे दर्जे का माना गया है, गुरु माता पिता यहाँ तक कि ईश्वर से भी ज्यादा आदरणीय विश्वसनीय तथा सम्मानीय माना जाता है। गुरु श्रद्धा, आस्था और समर्पण का पर्याय है। 21वीं सदी के शिक्षार्थियों की नई पीढ़ी गूगल के गर्भ से निकली है। जो बहुत सी ऐसी सूचनाओं से सराबोर है जिनसे आज का टीचर भी शायद न हो। इस पीढ़ी को रूढ़ीवादी शिक्षक नहीं संभाल पायेंगे। ये नए जमाने के नौजवान हैं। इस जनरेशन को अपना एक संवाद सहयोगी चाहिए। जो उनकी बाते सुन सके। राष्ट्रीय शिक्षा नीति -2020 में इन्हीं सभी बिंदुओं पर चर्चा की गई है।

**बीज बिंदु :-** अध्यापक, राष्ट्रीय, शिक्षानीति, समग्र विकास, दृष्टिकोण, रचनात्मकता इत्यादि।

**प्रस्तावना :-** गुरु :-पारंपरिक अर्थ में :- जिसमें गांभीर्य हो।

**भाग्यवत् पुराण में :-** कृष्ण ने उद्धव को तटस्थ तपस्वी (अवधूत) के चौबीस गुरुओं के बारे में बताया था। जिसके अनुसार गुरु वह है जो तपस्वी में अंतर्दृष्टि पैदा करता है।

**स्कंद पुराण में :-** गुरु गीता में शिव ने पार्वती को बताया कि गुरु के बिना किसी व्यक्ति के लिए वेद समझना असंभव है।

**कृष्ण के अनुसार :-** जो मनुष्य की स्वतंत्रता को स्वीकार कर उसे स्वतंत्र बनने में सक्षम बनाता है।

**शिव के अनुसार :-** हमें गुरु पर निर्भर रहना आवश्यक है।

**गुरु गीता के अनुसार :-** गुरु पिता या माता यहाँ तक कि देवताओं के समान या उनसे भी श्रेष्ठ हैं।

**गीता के अनुसार :-** श्रद्धावान लभते ज्ञानम तत्परः संयतेन्द्रियः -- गुरु श्रद्धा, आस्था और समर्पण का पर्याय है।

**पुण्यगो के अनुसार :-** ब्रह्मगति के बिना देव युद्ध नहीं जीत सकते थे और शुक्र के बिना असुर पुनर्जीवित नहीं हो सकते थे।

**भारतीय संस्कृति में :-** जिस आत्मा और अविनाशी तत्त्व का बोध हो जाए। गुरु प्रकाश रत्नभ है। गुरु पवित्रता का प्रवाह है।

# ज्ञानशौर्यम्



ISSN : 2582-0095

Peer Reviewed and Refereed International  
Scientific Research Journal



**GYANSHAURYAM**  
**INTERNATIONAL SCIENTIFIC REFEREED**  
**RESEARCH JOURNAL**

Volume 7, Issue 2, March-April-2024

Email: editor@gisrrj.com Website: <http://gisrrj.com>

6:50 ०० ॥ A

0.00 का नोट



# ज्ञानशौर्यम्

Gyanshauaryam E-ISSN: 2582-

International Scientific Refereed 0095

Research Journal

h-index = 4.7

[ Frequency : Bimonthly ] Impact Factor : 6.546

12

अध्यापक शिक्षा: राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के परिमेक्ष्य में

67-70

डॉ. कैलाश चन्द मीणा

सहायक आचार्य, शिक्षाविज्ञान, श्री लाल बालादुर शास्त्री राष्ट्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय, नई दिल्ली

## अध्यापक शिक्षा : राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के परिप्रेक्ष्य में

डॉ. कैलाश चन्द्र पीणा

सहायक आचार्य, शिक्षापीठ, श्री लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय, नई दिल्ली

### Article Info

#### Article History

Accepted : 25 March 2024

Published : 05 April 2024

#### Publication Issue :

Volume 7, Issue 2

March-April-2024

Page Number : 67-70

**सारांश :-** प्रस्तुत पत्र में राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के अनुसार शिक्षक शिक्षा, शिक्षा संस्थानों और अद्यतन शिक्षक प्रशिक्षकों तथा शिक्षा पाठ्यप्रक्रम तथा नवीनतम परिदृश्य में शिक्षक प्रशिक्षक और इस व्यवसाय से जुड़े नागरिकों की भूमिका पर प्रकाश डालने का प्रयास किया गया है। क्योंकि शिक्षक को राष्ट्र निर्माता (National Builder) माना जाता है, शिक्षक की गलती अक्षम्य होती है क्योंकि शिक्षक गलती करता है तो आने वाली अनेक पीढ़ियों का नाश होते चला जाता है। जबकि चिकित्सक, इंजीनियर जैसे पैसे में गलती करने पर इतना नुकसान नहीं पहुंचता है। अतः शिक्षक शिक्षा को गुणवत्ता पूर्ण बनाने की जिम्मेदारी शिक्षक प्रशिक्षण संस्थानों की है।

**बीज बिंदु:-** शिक्षा नीति, शिक्षा संस्थान, प्रशिक्षक, बहुविषयक, मूल्य, परंपराएं, नवाचार आदि।

**भूमिका :-** हम उत्ताप, अध्यापक, आचार्य, शिक्षक, गुरु कोई भी शब्द इस्तेमाल कर सकते हैं परंतु संसार का कोई भी कार्य ऐसा नहीं है जिसमें निपुणता प्राप्त करने के लिए हमें अध्यापक, शिक्षक या गुरु की आवश्यकता नहीं पड़ती हो क्योंकि तुलसीदास जी ने अमर्दीतमानस में कहा है कि :-

गुरु दिन भद्र निधि तरह न कोई, जो विरचि संकर सम होई - श्रीरामचरितमानस 7. 92 (ख) 3

उद्दीप्त साधारण व्यक्ति की कौन कहे कोई ब्रह्मा और शिव जी के समान क्यों न हो वह भी गुरु की शरण के बिना भवसागर को पार नहीं कर सकता तथा अमर्दीतमानस के प्रारंभ में कहते हैं

बंधु गुरु पद के कृपा सिंधु नररूप हरि । - मानस 1 आदि सोरठा 5

आदर्श गुरु की कृपा का समृद्ध और मनुष्य रूप में परमात्मा कहकर उनके चरण कमलों की बंदना करते हैं।

आदर्श गुरु का स्थान बहुत पवित्र और ऊंचे दर्जे का माना गया है गुरु माता पिता यही तक कि ईश्वर से भी ज्यादा, गुरु शिष्य को पवित्र गुरु तथा यम्पानीय माना जाता है गुरु सम्मारों का सृजन करके शिष्यों के विसर्जन के लिए प्रेरित करता है और शिष्य को पवित्र गुरु तथा योग्य बनाता है। कबीर दास जी ने गुरु के दर्जे के सम्मान में स्वयं भगवान से भी बढ़कर विश्वास से अटा जाने की बात कही है :-

गुरु गोविंद दोङ्ग छड़े, याके लागू पाय ।

बलिहारी गुरु आपने गोविंद दियो बताय ।



ISSN 2454-1230

एकादशोऽङ्कः, XI<sup>th</sup> Issue

जनवरी-जून, 2020

January-June 2020

# शिक्षाप्रियदर्शिनी

अन्ताराष्ट्रिया समकक्षव्यक्ति-समीक्षिता

बहुभाषी-घाणमासिक-शोधपत्रिका

**SHIKSHA PRIYADARSHINI**

(An International Peer-Reviewed Multi-Lingual)  
Half-Yearly Research Journal)

प्रधानसम्पादक:

प्रो. चांदकिरणसलुजा

प्रबन्धसम्पादक:

प्रो. परवनकुमार:

एकादशोऽड्डकः

जनवरी-जून, 2020

ISSN : 2454-1230

# शिक्षाप्रियदर्शिनी

अन्तर्राष्ट्रीया समकक्षव्यक्ति-समीक्षिता बहुभाषी-षाण्मासिक-शोधपत्रिका

## SHIKSHA- PRIYADARSHINI

(An International Peer-Reviewed Multi-Lingual Half-Yearly Research Journal)

प्रथानसम्पादकः

प्रो. चौंदकिरणसलूजा

निदेशकः, संस्कृतसंवर्धनप्रतिष्ठानम्, नवदेहली

सम्पादकः

डॉ. दिनेशकुमारयादवः

डॉ. नितिनकुमारजैनः

डॉ. सुनील कुमार शर्मा

डॉ. परमेश कुमार शर्मा

डॉ. आरती शर्मा

सहसम्पादकाः

डॉ. बि. वि. लक्ष्मीनारायण

डॉ. रमणमिश्रः

श्रीमती प्रज्ञा

सुश्री खुशबू कुमारी

प्रबन्धसम्पादकः

प्रो. पवनकुमारः

शिक्षाशास्त्रविभागः, केन्द्रीयसंस्कृतविश्वविद्यालयः एकलव्यपरिसरः, अगरतला

प्रकाशकः

संस्कृतसंस्कृतिविकाससंस्थानम्

बाड़ी, धौलपुरम्, राजस्थानम् – 328021

卷之三

v

2

पुराणेषु शिक्षा भक्तिमार्गेष्व वैषिष्ट्याधानाय आत्मसाध्यकामाः प्रदानं कर्म अभिप्तः

of *Paracardium*, *Cardium*, *Argiope*

John M. Pittman, 1890

Q, 119, 1985-86, 109-10.

10. What would you like to do next?

Digitized by srujanika@gmail.com

प्राचीन

भक्तिविषये वेदकालात् शिक्षा प्राप्यते । प्रथमे नामत् भक्ते मात्रे नन्दे विश्वासी । भक्तिविषये वेदकालात् तदैश्च भक्तिविषये कोऽनुरागाण्डितव्यतिविशेषो मुख्यं भक्ति । तथा च मीमांसाधृतम् । एष वाचार्यस्थानोऽपि द्वितीयं भक्तिजिङ्गासेति सूत्रोपात्ता भक्तिस्तत्पदार्थो तस्या परिति विशेषकाम् । एतो मात्राः विजितिविषये वेदकालात् विश्वासी द्वितीयं तदर्थं । अतएव परेति गौणी व्यावर्तयतीति भाष्यम् । गौण्या तु सामाधिप्रियदर्शीति पृथ्वी गौणी भक्ते वेदकालात् शिक्षा प्राप्यते । तद्युच्च गहडपुराणे ।

भज इत्येष वै धातः सेवायां परिक्रमितः ।

तस्मात् सेवा दृष्टे प्रोक्ता भक्तिसाधनभयम् ॥

100

तदेदाः स्मरण कीर्तनादयो बहवः । तैनभक्तिरस्त्रिविधा ह्येषा यात्प्रसन्नं प्रत्यक्षं गृहि चर्तुते । स विश्वेष्टु दयते ॥५३॥  
च पण्डितः । इत्यादि गरुड पुराणयोर्वैचनम् । भक्तिर्नवविधागाजन् इत्यादि भागवते वचने भक्तिर्नवविधाकैया प्राप्तारप्यद्युग्मा इति  
दशबिधत्वप्रतिपादकं बृहन्नारदीयवचनमन्यच्छेतादृशमवस्थयुत्यानुवाद एव।  
तथा च शिवपाठे ।

करतकत्यम्य तपस्य मम कि क्रियते तीः ।

बहिर्वाभ्यन्ते वापि मया भावो हि ग्राहते ॥

अत्र भावशब्देन बाह्या सेवारूपा चेष्टाप्रयत्नां प्रभिप्राप्य शरणाते । प्रकल्पा संशोधनेन गम्या प्रकल्पा । तदा उ शुद्धि-

पराजित खानि व्यतीणत्वयभास्त्रात्पादपश्चात्ति तन्त्रात्मक ।

**कथितीरः प्रत्यगात्मानमैक्षदावतयक्षामतत्वमिक्षन इति स्मर्तापि -**

योगिनाम् प्रपश्यन्ति भगवन् मनातन्मिति ।

ईधुरप्रणिधानादा इति योगमन्त्रे उप्येवम् ।

प्रणिधानपदस्य भक्तिपातया प्रज्ञात्वांप्ते ल्यात्यावात् बहुमृतम् ।

अपि सराधेन प्रत्यक्षानुमानाभ्याम् इति अव्यक्तमिति व्रहा भक्त्या प्रत्यक्षे भवतीति श्रुतिः स्मृतिः  
तथागमादिति । भक्त्या त्वनन्यया शक्य आहंस्ये विद्योर्जन । जात द्वये च तत्केन प्रवेष्ट च पापात् ॥

इति भगवद्बृथनमपि । अत्र प्रवैष्टपित्यनेन ब्रह्मापाणाद्यो मोक्ष उच्यते मोक्षपि भक्तयैव लभ्यते इत्यर्थः

ब्रह्म संस्थोऽपूर्वत्वमेति इति श्रुतौ निष्ठापयीय भक्तिवाचिना संस्थापदेन तथा प्रतिपादनात् अवश्य भक्तिमीमांसाद्य तत्संस्थाप्यामृतत्वोपदेशात् इति मत्रम् ब्रह्मामीमांसायो ।

तन्निष्टम्य पोक्षोपदेशात्, इति मात्रं च ।

महाराष्ट्र विधि संसदी को ; यातन विधि विभाग के लिए  
विधि कुरुक्षेत्र की कार्यकारी दल की नाम सूची का दिए गए

प्रतिक्रिया  
महाराष्ट्र विधि संसदी को ; यातन विधि विभाग के लिए विधि  
कुरुक्षेत्र की कार्यकारी दल की नाम सूची का दिए गए  
विधि कुरुक्षेत्र की कार्यकारी दल की नाम सूची का दिए गए  
विधि कुरुक्षेत्र की कार्यकारी दल की नाम सूची का दिए गए

#### मुख्य विधि कुरुक्षेत्र

महा विधि कुरुक्षेत्र की कार्यकारी दल की नाम सूची का दिए गए  
विधि कुरुक्षेत्र की कार्यकारी दल की नाम सूची का दिए गए

#### महाराष्ट्र विधि

1. शीरकावटी
2. हेलिको शीरकावटी
3. विधि
4. शीरकावटी कार्यकारी दल
5. शीरकावटी कार्यकारी दल
6. शीरकावटी कार्यकारी दल
7. शीरकावटी कार्यकारी दल
8. शीरकावटी कार्यकारी दल
9. विधि कार्यकारी दल
10. शीरकावटी कार्यकारी दल
11. शीरकावटी कार्यकारी दल
12. शीरकावटी कार्यकारी दल
13. शीरकावटी

14. शीरकावटी
15. शीरकावटी १, ५, १६
16. शीरकावटी
17. विधि कार्यकारी दल
18. शीरकावटी कार्यकारी दल
19. शीरकावटी कार्यकारी दल
20. विधि कार्यकारी दल
21. शीरकावटी ११ अधिकारी
22. शीरकावटी
23. शीरकावटी ११, १२
24. शीरकावटी कार्यकारी दल - ११
25. विधि कार्यकारी